देश और काल

काण्ट के अनुसार, 'संवेदन शक्ति के अन्तर्निहित आकार होने के कारण देश और काल बाहर नहीं है बल्कि हमारे भीतर हैं साथ ही ये अखण्ड और एकल हैं। अखण्ड तथा एकल होने के कारण काण्ट इन्हें विशुद्ध प्रत्यक्ष की संज्ञा देते हैं। चूंकि देश और काल को केवल प्रत्यक्ष बुद्धि के द्वारा ही जाना जाता है न कि अनुभव के द्वारा इसलिये ये प्रागनुभविक प्रत्यक्ष भी हैं।

काण्ट से पूर्व देश और काल के सम्बन्ध में निम्न मान्यताएं प्रचलित थी -

न्यूटन के अनुसार "देश और काल वस्तुनिष्ठ पदार्थ है अर्थात् बिना वस्तु और घटना के क्रमशः देश और काल का अस्तित्व नहीं हो सकता। चूंकि वस्तुएं और घटनाएं आत्मा से स्वतंत्र तथा बाह्य है, इसलिए देश और काल भी आत्मा से स्वतन्त्र तथा बाह्य है।" भारतीय दर्शन में न्याय-वैशेषिक में भी न्यूटन के समरूप स्थिति दिखाई देती है।

लाइबनित्ज के अनुसार 'देश और काल आत्मनिष्ठ में सम्बन्ध है अर्थात देश और काल हमारी आत्मा के भीतर विचार के रूप में विद्यमान है।

काण्ट ने उपरोक्त दोनों ही मतों का खण्डन किया तथा कहा कि -

हम यह तो कल्पना कर सकते हैं कि कोई भी वस्तु संसार में नहीं है पर, यह कल्पना नहीं कर सकते कि देश नहीं है। इसी प्रकार हम यह कल्पना भी नहीं की जा सकती।

काण्ट के अनुसार, "देश और काल को विचार के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये अखण्ड तथा एकल होने के कारण शुद्ध प्रत्यक्ष है। चूंकि विचार निर्माण के लिए अनेक उदाहरणों की आवश्यकता होती है, साथ ही विचार में गुणों की संख्या उदाहरणों से कम होती है जो कि एकल। जैसे - मनुष्यत्व का विचार हमारे भीतर तभी निर्मित होता है जब बाह्य जगत में हमने अनेक मनुष्यों का प्रत्यक्ष किया हो। इन मनुष्यों में विद्यमान गुणों की तुलना में मनुष्यत्व के विचार में विद्यमान गुणों की संख्या कम होती है। चूंकि मनुष्यत्व किसी एकल गुण को प्रदर्शित नहीं करता इसलिए इसे विचार कहा जाता है, जबकि देश और काल हमारे भीतर अखण्ड तथा एकल रूप में विद्यमान है, इसलिए इन्हें विचार की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

काण्ट के अनुसार, "छोटे-से-छोटे शिशुओं में भी देश और काल की चेतना होती है जबकि उन्हें कभी किसी ने देश और काल के बारे में नहीं बताया होता अर्थात उन्हें कभी देश और काल का अनुभव नहीं हुआ होता। इससे सिद्ध होता है कि देश और काल हमारे भीतर जन्मजात रूप से विद्यमान है अर्थात ये प्रागनुभविक तत्व हैं।"